International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अजमेर मेरवाड़ा के चीता, मेहरात और काठात समुदाय की सांस्कृतिक परम्पराएं एवं रीति रिवाज

दिव्यांश सक्सेना

शोधार्थी, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

शोध सार

अजमेर, मेरवाड़ा के चीता, मेहरात और काठात समुदायों की सांस्कृतिक परम्पराएं एवं रीति रिवाज अन्यायेंशः विवरण करती हैं। चीता समुदाय, जिसकी मुख्य आवाज भैंसर्या जाटों के समाजिक संगठन से जुड़ी हुई है, उनकी परम्पराएं मुख्यतः संगीत, नृत्य, और धार्मिक आयोजनों पर केंद्रित हैं। मेहरात समुदाय की विशेषता उनके विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिखाई देती है, जैसे कि गीत, कथा गायन, और वार्तालाप। काठात समुदाय की परम्पराएं विशेष रूप से उनकी समाजिक संगठन, परंपरागत कपड़े, और धार्मिक आयोजनों में प्रकट होती हैं। इन समुदायों की रिवाज और संस्कृति स्थानीय जनजातियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो उनकी अमूल्य विरासत को संरक्षित रखने में मदद करती हैं। काठात समुदाय की विशेषता उनके समाजिक संगठन, परंपरागत कपड़े, और धार्मिक आयोजनों में दिखाई देती हैं। उनके रीति-रिवाज उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक हैं और उन्हें उनके अद्वितीय विरासत को बनाए रखने में मदद करते हैं, इन समुदायों की परंपराएं और रीति-रिवाज उनके इतिहास, संस्कृति, और समृद्ध धार्मिक विश्वासों को प्रकट करते हैं, जो उनके समुदाय के विकास और समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मूलशब्द: समुदायिक संस्कृति, लोक परंपरा, धार्मिक आयोजन, सांस्कृतिक रीति-रिवाज, सांस्कृतिक विरासत

राजस्थान का एक इलाका ऐसा भी है जहाँ के लोग सभी धर्मों के उपासक है, मध्य राजस्थान के चार जिलों *अजमेर, भीलवाड़ा, राजसमंद और पाली* के मध्य बसा पहाड़ी क्षेत्र *मगरा-मेरवाड़ा क्षेत्र* नाम से जाना जाता है. अजमेर के नरवर से लेकर राजसमंद के दिवेर और ब्यावर, मसूदा के पहाड़ी क्षेत्र में करीब *10 लाख* की आबादी वाले चीता, मेहरात और काठात समुदाय जोकि प्रमुखतः एक खेतिहर समूह है इन्होनें 3 इस्लामिक रस्में अपना रखी हैं. ये लोग मंदिरों में शीश नवाते हैं, पूजा करते हैं और मस्जिद में सजदा भी,

एक बेटी के विवाह में फेरे होते है तो दूसरी के में निकाह पढ़ते हैं, क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के वंशज होने तथा अपना क्षत्रिय मूल धर्म होने के बावजूद भी पिछले करीब 700 सालों से ये समुदाय हिन्दू और मुस्लिम परम्पराओं में इस तरह से उलझे हैं कि ये बड़ी दुविधा में फंस गए हैं कि किस धर्म का पालन करें. इस्लामिक संस्थाएं इन्हे मुस्लिम बनाने के प्रयासों में जुटी हैं वही दूसरी तरफ हिन्दू संस्थाओं का पूरा जोर उन्हें अपने धर्म में रोकने में लगा है समाज की कुछ विघटनकारी शक्तियों द्वारा इस वर्ग को मुस्लिम घोषित कर उन्हें अल्पसंख्यक वर्ग में लाने की कोशिश की गयी थी, जिसका हिन्दू संगठनों द्वारा इस आधार पर विरोध किया गया कि वर्ष 1955 और 1994 के भारत सरकार के गजट नोटिफिकेशन में इन जाति समूहों को अन्य हिन्दू जातियों के साथ अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल किया गया है. फिर भी विगत कुछ वर्षों में कुछ समूह पूरी तरह मुस्लिम हो गए वहीँ कुछ पूरी तरह हिन्दू हो गए और अभी भी बड़ी संख्या में है जो न तो पूरी तरह हिन्दू है और न हीं पूरी तरह मुस्लिम. ये लोग दीपावली, होली, रक्षाबंधन, मकर संक्रांति, गणेश चतुर्थी के साथ ईद भी समभाव से मना रहे हैं, देवी देवताओं को पूज रहे हैं, रामदेवरा की पदयात्रा पर जाते हैं, अपने घरों पर रामदेवजी के और अन्य देवताओं के ध्वज फहराते हैं, तो मजारों पर भी जा रहे हैं. पर पिछले कुछ सालों में कट्टरवादिता के चलते चौहान वंश के लोग ऐसे असमंजस में आ गए हैं कि बड़े बेटे का नाम लक्ष्मण तो छोटे का हकीम, एक ही घर में दो बहनों के नाम लक्ष्मी और सलमा हो गए हैं. पिता का नाम सरदार सिंह तो उसके पुत्र का नाम रामा खान हो गए हैं. ये जातियां भगवान शिव, गणेश जी, आशापुरा माता, चामुंडा माता, लोकदेवताओं बाबा रामदेवजी, तेजाजी महाराज, देवनारायण जी, बालाजी महाराज और अजमेर के संस्थापक अजयपाल जी को पूजते हैं. ये जातियां जहाँ भी रह रही हैं वहां इन देवी देवताओं के प्राचीन देवरे, थान और मंदिर इन्हीं जाति समूहों द्वारा स्थापित किये गए हैं जहाँ इन 5 प्रमुख लोकदेवताओं के 5 बड़े मेले हर साल गांव में लगते हैं.

वर्ष 1192 में तराइन के द्वितीय युद्ध में अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद मुस्लिम आक्रांताओं ने पृथ्वीराज चौहान के वंशज इस सम्पूर्ण समाज का इस्लामीकरण करने का प्रयास किया इन आक्रांताओं से अपनी बहन बेटियों की रक्षा के लिए इन जातियों ने अरावली पर्वतमाला के दुर्गम स्थानों में छुपकर अपने घर बनाये लेकिन वे इन हमलावरों से नहीं बच सके और सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के मजबूरीवश इन्होने इस्लामिक आक्रांताओं की तीन बातों को मानना शुरू कर दिया

- सुन्नत करवाना
- मृत्यु के बाद जमीन में दफनाना
- हलाल मांस का सेवन करना

आगे चलकर यही समूह चीता, मेहरात, काठात और रावत समुदाय बने. इन जाति समूहों के उद्भव की कहानी प्रारम्भ होती है सम्राट पृथ्वीराज चौहान के दत्तक पुत्र विजयराज से, जिनके पुत्र जोधा लाखण हुए

जिन्होनें नाड़ोल में अपना साम्राज्य स्थापित किया। जोधा लाखण कुलदेवी माँ आशापुरा के परम भक्त थे। नाड़ोल में माँ आशापुरा का भव्य मंदिर है जहाँ चौहान वंशी चीता, मेहरात और रावत जाकर माँ की आराधना करते हैं। नाडोल से आकर चौहान वंशी *अनहल और अनूप* ब्यावर के पास *चांग* नामक गांव में आकर बसे और वहीं अपनी कुलदेवी आशापुरा माता को स्थापित किया। उस दौर में ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार चौहान वंश के राजपूतों से अन्य दूसरे सभी राजपूतों ने वैवाहिक संबंध खत्म कर दिये थे, इस घटना के बाद चौहान वंश के सरदारों को अपने समाज को दो भागों में विभाजित करना पड़ा। इनकी 16 पीढ़ियां गुजर जाने के बाद *जस्साखेड़ा गांव* में अनहल और अनूप वंश के लोग एकत्र हुए और चौहान वंशीय पंचों की बैठक में विचार मंथन के बाद कुछ समझौते हुए, जिसमे अनहल की शाखा *चीता* और अनूप की शाखा *बराड़* कहलायी, और इस स्थान पर यह निर्णय हुआ कि चीता और बराड़ आपस में विवाह संबंध करेगें। अनूप के बराड़ वंश की आठवीं पीढ़ी में *विहालराव* हुए जिन्हे *रावत* की उपाधि दी गयी और आगे चलकर इन्ही के वंशज *रावत* कहलाये. अनहल की 17वीं पीढ़ी में *राव सेहलाजी* हुए, जिनके वंशज *चीता* कहलाए। जिनसे चीतों की डांग बनी, जो अजमेर शहर के आस-पास के क्षेत्र में है। इनमें 12 खेड़े व लगभग 20 गांव है, इस डांग के प्रमुख ठिकानों में राजोसी, नरवर, अजयसर, खोकड़ी, नाथूथला, सोमलपुर, चौरसियावास व नौसर है।

अनहल की बीसवीं पीढ़ी में *राव बीरमदेव* हुए, बीरमदेव के पुत्र *राव मेहरा* के वंशज *मेहरात* कहलाए। मेहराजी के पुत्र राव दूदा के 4 पुत्र *राव हरराज, राव खोखर, राव कुम्बा व राव गजराज* हुए। राव हरराज व गजराज को *काठा* व *घोड़ा* की उपाधि मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा दी गई। राव हरराज और राव गजराज ने चौहान वंश की बहन-बेटियों की अस्मिता की रक्षा के लिए मुस्लिम आक्रान्ताओं के दबाव के चलते 3 मुस्लिम रिवाज अपनाए। जिनमें दफनाना, हलाल की खाना और सुन्नत कराना था। भले ही इन दोनों भाईयों ने 3 बातों को मजबूरीवश मान लिया हो, लेकिन अपने चौहान वंश के असली हिंदू संस्कारों, हिंदू त्यौहारों व देवी-देवताओं की पूजा आराधना को नहीं छोड़ा। *काठा दादा* महान थे उन्होंने मुस्लिमों के लाख दबाव के आगे भी न तो कभी नमाज पढ़ी, न टोपी लगाई और न ही कभी किसी मस्जिद में गए। मुस्लिम आक्रांता *काठा दादा* से न तो नमाज अदा करा सकें और न ही मस्जिद में जाने को मजबूर कर सकें, इसलिए ही वो काठा दादा कहलाए। काठा मतलब जो अपने धर्म का अनुसरण करना जानता हो। राव हरराज के पुत्र, इन दोनों वीर और साहसी भाइयों के वंशज *काठात* कहलाए।

चौहान वंश का विस्तार होने व बड़े भूभाग में फैलने के बाद चौहान सरदारों ने अपनी विशिष्ट पहचान कायम रखने के लिए क्षेत्रों के हिसाब से राव हरराज के चार पुत्र जोधा, हापा, नापा और करणा हुए. जिन्हें परस्पर क्षेत्रों के हिसाब से *डांग व्यवस्था* में बांटा गया, डांग का अर्थ है क्षेत्र विशेष और इन डांगों में तय

किया गया कि एक डांग का व्यक्ति अपनी डांग को छोड़कर अन्य तीन डांगो में विवाह सम्बन्ध स्थापित कर सकता है.

1. *जवाजा भीम* क्षेत्र में राव हरराज(काठा दादा) के पुत्र राव जोधा के नाम पर *जोधाजी की डांग* बनी। डांग का अर्थ इस क्षेत्र में जोधाजी के वंशज रहते हैं। जोधाजी की डांग में लगभग 80 गाँव हैं। इस क्षेत्र में प्रमुख ठिकाने अभ्रूण, अनाकर, सारोठ, बोरवा, राजोर, बगतपुरा है।
2. *मसूदा* क्षेत्र में राव हरराज के दूसरे पुत्र हापा थे, उनके पुत्र खेतसिंह हुए, खेतसिंह से पुत्र राव गाजी हुए। उनके नाम से *गाजी जी की डांग* का नाम पड़ा। इस क्षेत्र में प्रमुख ठिकाने रावला का झक, श्यामगढ़ खीमपुरा हैं.
3. (3)हरराज के तीसरे पुत्र नापा के कोई औलाद नहीं थी
4. (4)हरराज के चौथे पुत्र राव करणा के नाम पर *करणा जी की डांग* बनी इस क्षेत्र के मुख्य ठिकाने राजियावास जोहरखेड़ा चंग चित्तर कोलपुरा भीमगढ़ हैं.

- ***सेंदरा सम्मेलन 1947*** : जोधपुर महाराजा *हनुवंतसिंह*, मेवाड़ महाराणा *भगवतसिंह* के नेतृत्व में 1947 में सेंदरा में विशाल चीता मेहरात समाज का सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमे दोनों राजाओ ने अपने भाषण में चीता मेहरात समाज के लोगो को चौहान वंश का बताया और उन्हें स्मरण कराया कि आपका वंश क्षत्रियों में श्रेष्ठ है, आप लोग भूलभुलैया से बाहर निकले और क्षत्रिय धर्म का पालना करे. इस सम्मेलन में बड़ी संख्या में चीता मेहरात और रावत सरदारों ने हिन्दू रिवाजो के साथ जीवन जीने का संकल्प लिया था.
- ***ब्यावर सम्मेलन 1975 :*** जोधपुर के महाराजा *गजसिंह*, मेवाड़ महाराणा *भगवतसिंह* और ग्वालियर राजमाता *विजयाराजे सिंधिया* ने 1975 में ब्यावर के मिशन ग्राउंड में आयोजित विशाल सम्मेलन में भाग लिया, तीनो ने चीता मेहरातों से आह्वान किया कि अपने वंश के गौरवशाली इतिहास, अपने पुरखों की परंपराओं को ध्यान में रखते हुए आपके पूरे गौरवशाली चौहान वंश के क्षत्रिय हिन्दू समाज द्वारा मजबूरीवश अपनायी गयी 3 बातों को और पूरे समाज के माथे पर कलंक लगाने वाले रिवाजों को उखाड़ फेंकने का समय आ गया है.
- ***मगरा मेरवाड़ा क्षेत्र में चीता, मेहरात और काठात समुदाय के प्रमुख स्थान***

अजमेर जिले के *देवखेड़ा और अनाकर गांवों* के बीच एक विशाल चट्टान पर एक प्राचीन किला बना हुआ है यहाँ बाबा रामदेवजी का एक प्राचीन मंदिर स्थित है, जब मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा मंदिरो को तोडा जा रहा था तो इसे बचाने के लिए *अल्लाह की टूक* के नाम से पुकारा गया.

हथून का किला: चौहान वंशीय मेहरातों का एक प्रमुख गढ़ रहा है, इस किले की विशालता और मजबूती से चौहान वंश की भव्यता झलकती है. हथून के अंतिम चौहान वंशीय राजा भूपतराज मेहरात एक पराक्रमी

और वीर पुरुष थे जिन्होंने अंग्रेज़ों से लड़ाई लड़ी और अपना बलिदान दिया. इस किले में आशापुरा माताजी का मंदिर स्थत है और किले के दायीं तरफ भूपतराज की समाधि भी बनी हुई है.

झाक का किला: चौहान वंश की गाजी जी की डांग के मेहरातो का ठिकाना रहा है, किले के पास एक हथाई बनी हुई है जिस पर हर वर्ष होली और दीपावली पर मेहरात ठाकुर एकत्र होते हैं मसूदा ठिकाने के राव की ओर से चौहान वंशीय क्षत्रिय मेहरातों के सम्मान में होली के राम राम के अवसर पर गुड़ की ढेलियाँ मेहरातों में वितरित किया जाता है. इसके साथ ही चीता मेहरात सामूहिक *गैर नृत्य* कर होली का त्यौहार मनाते हैं. झाक की कालका माता मंदिर एक महत्वपूर्ण शक्ति पीठ है इसके पुजारी *रमजान मेहरात* हैं.

शिवपुरा घाटा: यह स्थान वह सिद्धपीठ है जहां काठा दादा के वंशजों में *गाज़ी दादा* हुए, उनके कोई संतान नहीं थी, गाज़ी दादा ने भगवान शिव की कठोर तपस्या की. इन्ही गाज़ी दादा का वंश जिस क्षेत्र में रहता है उसे गाज़ी जी की डांग के नाम से जाना जाता है और यह शिवजी के वरदान से ही फली फूली है इस मंदिर पर हर शिवरात्रि पर काठा दादा के चौहान वंशी चीता व मेहरात बड़ी संख्या में शिव की पूजा अर्चना करते हैं, जिसके पुजारी भी गाजी काठात के परिवार से ही हैं.

अखैगढ़ मंदिर : मेहरातो का प्रमुख ठिकाना रहा है यहाँ प्राचीन किलो के अवशेष हैं. किले के पास भगवान *देवनारायण का प्रसिद्ध मंदिर* है इस मंदिर की देखरेख मेहरात करते हैं अखैगढ़ मंदिर के भव्य द्वार का निर्माण सिरोला निवासी *हरी काठात पुत्र श्री देवजी काठात* ने कराया है.

बोरवा का किला: यह जोधा जी की डांग का प्रमुख ठिकाना रहा है इसे *बड़ा रावला* भी कहते हैं यह किला चौहान वंश के शौर्य व् पराक्रम का प्रतीक है यह किला गांव झाक लूलवा से आगे हथून जाने वाले मार्ग पर *ग्राम बोरवा* में बना हुआ है इस किले के बाईं तरफ चौहान मेहरातो की कुलदेवी आशापुरा माता का मंदिर है, किले के बाहर हथाई व घुड़साल स्थित है इस गांव के मेहरात ठाकुर कहलाते हैं.

अजयपाल जी : चौहान वंश के प्रतापी राजा अजयराज ने संन्यासी के रूप में इसी स्थान पर भगवान शिव की तपस्या करते हुए अजयपाल बाबा का मंदिर स्थापित किया, अजयपाल जी को चीता समुदाय अजमेर नगर का सबसे पहला मंदिर मानते हैं. इस मंदिर में प्रत्येक सोमवार को चीता मेहरात समाज के लोगों द्वारा नियमित दुग्धाभिषेक किया जाता है, भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष में छठी तिथि को इस मंदिर के विशाल मेले में हजारों की संख्या में चीता और मेहरात जाति के लोग झंडा चढ़ाते हैं.

बदनौर : ऐतिहासिक जानकारी के अनुसार मेवाड़ रियासत के एक प्राचीन ठिकाने बदनौर पर चीतों का शासन काफी समय तक रहा है। बदनौर से ही आकर चीतों ने मजीतिया, नरवर, राजौसी, हटूण्डी ठिकाने बसाए। ठिकाने के टीकायत को *ठाकुर* की उपाधि प्राप्त थी जैसे नरवर ठाकुर, राजौसी ठाकुर आदि। बाद में मुस्लिम शासकों ने इन्हें *खान* की उपाधियाँ दी, आगे चलकर यही ठाकुर *खान* कहलाने लगे.

श्यामगढ़ का किला: यह गाजी जी की डांग का एक प्रमुख ठिकाना रहा है, गाजी दादा यहीं एक किला

बनाकर रहते थे। बाद में इनके वंशज धीरे-धीरे *मसूदा खरवा* क्षेत्र में कई गांव बसाकर रहने लगे, श्यामगढ़ में पहाड़ी पर एक प्राचीन शिव मन्दिर व माताजी का मन्दिर स्थित है। इसी गांव में *आंतेड़ माता* का भी एक चमत्कारी धाम है । प्राचीन शिव मन्दिर व आंतेड़ माता मन्दिर से श्यामगढ़ सहित अन्य क्षेत्र में रहने वाले मेहरात जाति के लोगों की आस्था जुड़ी है। सैकडों सालो से मेहरात जाति के लोग यहाँ पूजा-अर्चना करने आते हैं। श्यामगढ़ में *सात भाईयों की बड़ी हथाई* बनी हुई है। ये सभी गाजी दादा के पोते थे, इन हथाईयों पर होली दीपावली पर लोगों का सामूहिक रूप से उठना बैठना होता था और एक समय में कई मामलों के निर्णय भी हुआ करते थे। आज इन हथाइयों का प्रयोग धार्मिक कार्यक्रमों के लिए होता है.

धार्मिक विचारों के मध्य असमंजस की स्थिति :

मेहरात जाति पर शोध और अध्ययन करने वाले *प्रोफ़ेसर जगमालसिंह* कहते हैं कि मेहरात शुद्ध रूप से गौरवशाली चौहान वंश के हिंदू क्षत्रिय हैं। चौहान शासकों ने मुस्लिम आक्रांताओं का अंतिम सांस तक मुकाबला किया। हरराजजी को *काठा* की उपाधि मिली लेकिन इस उपाधि में कालांतर में विसंगतियाँ आने लगी, काठा उपाधि को कट्टरता से जोडते हुए इस शब्द का इस्लामीकरण कर दिया और कुछ लोगों ने अपने नाम के आगे काठात लगाते हुए अपने आपको मुस्लिम बताना शुरू कर दिया. देश आजाद होने के बाद समाज के लोग मंदिरों और हिंदू परंपराओं से विमुख हुए हैं, उनमें *निकाह* की परंपरा बनाई गयी. सदियों पुरानी राजपूती वेशभूषा में बदलाव आ रहा है. महिलाओं में *कांचली, कुर्ती, लहंगा, घाघरा और ओढ़नी* पहना जाता था, वहीं अब वेशभूषा के रूप में *लंबी कुर्ती और गरारा* पहनना शुरू किया गया। इसी तरह पुरुषों में जहाँ *पगड़ी और साफा* पहना जाता था, वहीं अब *जालीदार टोपी* पहनी जा रही हैं। धोती कमीज के स्थान पर *पाजामा और लंबा कुर्ता* पहना जा रहा है, राजपूती मूछों के स्थान पर दाढी रखी जा रही है. इस समाज के परिवारों में किसी की अकाल मृत्यु होने पर उसका एक स्थान बनाया जाता है जिसे *झुंझार* कहते हैं, जिस पर मूर्ति लगी होती है, पर कुछ क्षेत्रों में मूर्तियों को हटाकर उन पर *मांदलिया* बनाकर उसे *पीर बाबा* का नाम दिया जा रहा है।

चीता मेहरात समाज के लोगों के मकानों के बाहर विभिन्न धार्मिक प्रतीक चिह्नों का प्रयोग किया जाता हैं जिनमें हिंदू प्रतीकों के रूप में ॐ, स्वास्तिक, त्रिशूल की टाइल्स लगी है तो वहीं कुछ घरों में इस्लामिक प्रतीक 786, मक्का मदीना और या ख्वाजा गरीब नवाज की टाइल्स भी लगाई जा रही है। ऐसी ही द्वंद की स्थिति से इनकी बेटियों को भी गुजरना पड़ रहा है, पहले जब रावत समाज की बेटी मेहरात समाज के घर में विवाह करके आती थी तो मृत्यु के बाद उसे दफनाया जाता था। वहीं मेहरात समाज की बेटी रावत समाज के घर में ब्याहती थी तो उसका दाह संस्कार किया जाता था। बाद में रावत समाज ने उसी चीता मेहरात परिवार को अपनी बेटी देने का फैसला किया जो हिंदू संस्कारों को अपना रहे हैं। इसी प्रकार पहले

हर चीता, मेहरात, काठात और रावत परिवार में *रावत माता का पूजन* हुआ करता था, लेकिन अब ऐसा बहुत ही कम घरों में देखने को मिलता है.

इस्लामिक परम्पराओं को मानने वाले चीता, मेहरात, काठात भी पूरी तरह मुस्लिम नहीं हो सके अजमेर के बाहरी क्षेत्र में *चीतों की डांग में अजयपाल और अम्बा मसीनिया गांवों* के बीच स्थित चीता मेहरात समाज की गहरी आस्था के केंद्र *गणेशजी के मंदिर* में किसी भी शुभ कार्य यथा अपने बेटे या बेटी के विवाह के समय चीता मेहरात लोग सर्वप्रथम यहीं पूजा कर प्रथम निमंत्रण गणेश जी को अर्पित करते हैं और घर जाकर *कलश* और *गणेश जी का पाठा* बैठाते हैं और *हल्दी एवं मेहंदी* की रस्म भी पूरे जोर शोर से अदा करते हैं और शादी के बाद गणेश मंदिर आकर परिक्रमा कर गठजोड़ खोलते हैं. कृषक चीता, मेहरात और काठात परिवारों में गेहूं की नयी फसल आने पर क्षेत्र के ये किसान *पांच किलो चूरमे की प्रसादी का भोग* लगाते हैं. चीता मेहरात परिवार जहाँ शव को दफना रहे हैं वही इसके साथ साथ हिन्दू संस्कारों के अनुसार *बारहवें की रस्म* भी निभाई जाती हैं जबकि मुस्लिम संस्कारों में *तीसरा और बारहवां* नहीं होकर *चालीसवां* होता है.

मेहरात समाज की चारों डांगों में सबसे बड़ी आस पहाड़ की धूणी पर *1686 ईस्वी का एक ताम्रपत्र* लगा हुआ है। इसमें चीता मेहरात ठाकुरों ने एक सम्मत फैसला कर मुसलमानों के साथ रोटी बेटी का संबंध नहीं रखने का निर्णय किया था। इसके साथ ही मुसलमानों के एक भी रीति रिवाज नहीं मनाने का निर्णय किया गया था। इसी तरह के निर्णय का एक शिलालेख *राजगढ़* में भी लगा हुआ है। यहाँ भी चीता मेहरात ठाकुरों ने एक मत होकर इस बात का निर्णय लिया था कि मुस्लिम रीति रिवाजों को नहीं अपनाएँगे। *अजमेर के राजियावास* सहित कई ऐसे क्षेत्रों के उदाहरण हैं जहाँ चीता मेहरातों ने काठा दादा के समय से चली आ रही तीनों बातों को त्यागा है। उनकी जीवनचर्या में भी हिंदू संस्कार साफ झलकते हैं। उनका पहनावा, विवाह के मौके पर निभाई जाने वाली रस्में, गीत आदि सबमें हिंदू संस्कार मिलते हैं। ताम्रपत्र में भी जिनके नाम लिखें हैं उन सभी के आगे *ठाकुर* लिखा हुआ है। अगर चीता, मेहरात और काठात हिंदू नहीं होते तो आस पहाड़ की धूणी, चांग की धूणी, शिवपुरा का घाटा, झाक माता का मंदिर, देवरी भराई की माता का मंदिर, जगह-जगह तेजाजी के मंदिर इन सबको कोई भी कैसे नकार सकता है।

आज के समय में इन चौहान वंशीय मेहरातों को उनका इतिहास बताया जाना जरुरी है जिससे वे समझ और जान सकें कि आखिरकार उनके पूर्वज और वे हिंदू धर्म और परंपरा के हैं। यह विसंगति का परिणाम है कि एक भाई का नाम छोटू खां तो दूसरे का नाम भंवरसिंह है। एक भाई दफनाया जा रहा है तो दूसरे का अग्नि संस्कार हो रहा है। *राजस्थान चीता मेहरात हिन्दू मगरा मेरवाड़ा महासभा* की ओर से पूरे मगर मेरवाड़ा क्षेत्र में फैली चारो डांगो में हर वर्ष *ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी* को अपने पूर्वज महान योद्धा सम्राट

पृथ्वीराज चौहान की जयंती और सभी प्रमुख त्यौहार इन तीनों समाजों के सहयोग से सामूहिक तौर पर बड़े ही धूमधाम से मनाये जाते हैं.

सन्दर्भ सूची

1. मत चूके चौहान स्मारिका (2015-16) संपादक- श्री रजनीश रोहिल्ला (वरिष्ठ पत्रकार) अजमेर.
2. दैनिक भास्कर आर्टिकल, (अजमेर) संस्करण दिनांक (28-12-2022).
3. राजस्थान का इतिहास (1986), कालूराम शर्मा और प्रकाश व्यास, जयपुर